समीक्षा

वर्तमान युग की भागदौड़ वाली, अर्थ लिप्सु, भौतिकवादी काल संस्कृति में चन्द्र 'प्रभाकर' के शान्त रस से परिपूर्ण संकलन तपती दोपहर में चलते पाठक पथिक के मन को शीतल मन्द बयार के आनन्द की सी अनुभूति प्रदान करते हैं। बढ़ती अपसंस्कृति, निरन्तर प्रसार पाती मानवीय अभिप्साओं और पश्चिम की आँधी के बीच इन कृतियों के माधयम से उन्होंने दीप जलाने का जो साहस किया है वह प्रसंशनीय है।

इनकी रचनाओं के अधयन से पता चलता है कि उनकी रचनाएं उनके मन से पीड़ा के झरने की तरह निःसृत होती हैं। वे एक झरने की भाति है जो नितान्त नैसर्गिक है, उसे चलने या बहने के लिये कोई प्रयास नहीं करना पड़ता। इनके पद समाज में ैले दर्द को देखकर, अनुभूति कर, ईश्वर के प्रेम और विरह में डूब कर निकले हुए प्रेमाश्रुओं की भाति है। उनकी रचनाओं को हर एक पद को हर पक्ति पढ़कर प्रतीत होता है कि इन्हें लिखते हुए न जाने कितनी बार उनकी आँखों में बादल उमड़े होंगे, न जाने कितनी बार वो बरसे होंगे। सभी कृतियों में शायद ही ऐसा कोई पद हो जिसमें उनके नयनों से नीर बहने या रोने का वर्णन न हो। उन्होंने स्वयं लिखा है-

टूटे पड़े तार जिसके, दर्द का इक साज हूँ।

कुछ न बोलो चुप रहो, मैं डबडबाई आवाज हूँ।

पदों को पढ़ते हुए सचमुच ऐसा लगता है कि वे मन की पीड़ा को शब्दों में ढाल रहे हैं, राष्ट्र में ैली अराजकता भूख, भ्रष्टाचार के लिये वे हमारे नेताओं को ही जिम्मेदार मानते हैं। नेताओं का बिम्ब उभरते ही उनके मन की पीड़ा सीधो आक्रोश के रूप में उबल पड़ती हैं वे सीधो उनसे प्रश्न करते है :-

जीवन नीरस बातें नीरस, सूखा रस क्यों कुछ तो बोलो? दिल भाषण से समझे कैसे, जब लगी क्षुधाा हो तुम बोलो। सम्पन्न हुए सब साधान से, तुमको तो मस्ती सूझ रही। तुम आँख उठाकर तो देखो, टोली भूखों की घूम रही।

'देश के नेताओं' द्धपृष्ठ -7, पद 1-2ऋ

इतनी विकट परिस्थितियों में उनके मन में पीड़ा और आक्रोश की उत्पत्ति तो होती है लेकिन उनका मन टूटता नहीं है। वह पाठक मन में निरन्तर न हारने का

भाव भरते हुए लिखता है -

आंसू आयें तो रो लेना, मन में आशा का दीप जला। इस भूल भुलैया जीवन में, गम भूल यहाँ पतवार चला। चलता जा बस तू चलता जा, मंजिल तो बस चलना ही है।

चन्द्र 'प्रभाकर' ने जिस साहित्य की सर्जना की है उसमें विषय वैविधय तो है लेकिन उनका मन हरि रमण में ही सुख और आनन्द की अनुभूति करता है यही कारण है उनकी अधिकांश रचनाओं में शान्त रस का ही प्रादुर्भाव हुआ है। अब तक प्रकाशित उनकी 15 कृतियों में से 12 कृतियाँ इसी रस से युक्त हैं। अतः अधयात्म और तात्विक विवेचन के बिना इनकी विवेचना अपूर्ण होगी। वे अपने ईष्ट को सर्वत्र , सर्वव्यापी और सर्वशक्तिमान घोषित करते हैं वह कण कण में व्याप्त हो कर भी अगोचर है। उसे दृष्टिगोचर करने के लिए रचनाकार की आँखों में निरन्तर प्रेम और विरह के आंसू जल प्रपात की तरह बहते रहते हैं। इनका ईश्वर एक रूप न होकर बहुरूपा है। कहीं वे उसे राम कह कर सम्बोधित करते है तो कहीं कृष्ण-कन्हैया, वंशीधार या राधाा मोहन जैसे -

जीवन की यह शाम पुकारे, आओ राधाा मोहन प्यारे। तुम बिन अब तो रहा न जाता, तड़ें मेरे प्राण पुकारे।

'नयना बरसे'द्धपृष्ठ 49, 87/1ऋ और

जीवन तुम पर प्रभु है वारी, रूठो मत तुम कृष्ण मुरारी। तुझ चरणों तक मैं आऊँ, दे दे संबल प्रभु मैं हारी।

'जप हरि'द्धपृष्ठ 13, 15/1ऋ

सांवरिया राधाा मोहन के साथ साथ राम नाम के रमण में भी उनका मन खूब रमा है। वे राम के अतिरिक्त किसी अन्य को अपना आराधय ही नही मानता। उनके अनुसार-

नहीं राम बिन कोई दूजा, प्रभु तुम्हारी करता पूजा। दीन बन्धाु करूणा के सागर, प्राण पुकारें तू अब आ जा।

'हरि बोलो' द्धपृष्ठ 20, 27/1ऋ

इन्होंने ईश्वर के सगुण रूप जैसे राम, कृष्ण के सम्बोधान का प्रयोग भले ही किया हो लेकिन प्रत्येक स्थान पर उनका अज़र, अमर, अखण्ड, असीम, निराकार रूप ही परिलक्षित होता है। कहीं भी वे इसे मानवीय स्वरूप की सीमाओं में नही बांधाते। उन्होंने अपने कुछ पदों में ईश्वर के ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि विशेषणों के अतिरिक्त शक्ति स्वरूपा देवी माँ का भी उल्लेख किया है। अधिकतर स्थानो पर

उन्होंने अपने इष्ट के लिये उन्होंने जिस नाम का सर्वाधिक प्रयोग किया हैं, वह है ‘हरि’। इसका सर्वाधिक प्रयोग न केवल उन्होंने अपने पदों मे किया है अपितु अपनी चार कृतियों के शीर्षक में उन्होंने इसे ही उपयुक्त माना है। उनका मन हरि से पल भर की भी दूरी सहन नहीं कर पाता। उनके अनुसार-

हरि को सुमरो हरि को जी लो, जख्म लगे हरि से ही सी लो। दो दिन की जिन्दगानी सारी, जाम उसी का हरपल पी लो। प्यास भूख और चाह बताये, पल पल अखियां नीर बहाये। करो जतन पर हरि ना भूलो, मिटे सभी पर हरि ना जाये।

‘प्यासी अखियाँ’ द्धपृष्ठ 35, 56/3ऋ

वे पल पल में, मन-कर्म और वचन में हरि भजन और हरि भक्ति भक्ति का सन्देश देते हैं वे अंश मात्र भी अपनी आराधाना में ज्ञान तप के हठयोग, कर्मकाण्ड, तन्त्रसाधाना का समावेश नहीं होने देते। वे तो अपने ईष्ट से मिलने के लिये सभी मार्गों का त्याग करते हुए सम्पूर्ण समर्पण के साथ प्रेम के मार्ग को ही अंगीकार करते है। मीरा कहीं न कहीं उनकी भक्ति का आदर्श प्रतीत होती है। वे समस्त रचनाओं मे उसकी प्रेमाभक्ति के अनुचारी प्रतीत होते हैं ईश मिलन अनुभूति पर उनका मन मीरा की तरह नाच उठता है। स्वयं उनके ही शब्दो में-

निज प्यार में रंग ले मोहन, नाचूँ जैसे मीरा नाची। लोक लाज मर्यादा खोकर, चरण पडू. बस तू ही सांची।

‘नयन बसो’ द्धपृष्ठ 35, 56/3ऋ

उनका मन हरि बिना अत्यन्त व्यथित हो उठता है वे हरि को पाने के लिये अनेकों जन्मों तक भी उनके चरणों की दास भाव से सेवा करने को तत्पर है। बाट निहारूँ में वे लिखते हैं -

तुम बिन मेरा मन्दिर सूना, हरि हिय में बस जाओ। कोना कोना रोवे दिल का, आकर इसे सजाओ। बाट निहारूँ तू नहिं आवे, कैसे मन समझाऊँ? जन्म जन्म का दास तुम्हारा, फिर भी नीर बहाऊँ।

‘बाट निहारूँ’ द्धपृष्ठ 46, 66/1ऋ

इनकी सभी कृतियों में ईश्वर के प्रति राग की भावना ही बलवती है। इसी के कारण उनके मन में वियोग की पीर उत्पन्न हुई है। प्रत्येक रचना में, प्रत्येक पद हरि से मिलन को आतुर और विनय से युक्त प्रतीत होता है। वे अपने प्रिय से

मिलने के लिये विछोह से आँसू भी बहाते हैं। लेकिन जब इतने प्रेम, पूर्ण समर्पण, स्मरण, वन्दन से भी उससे मिलन नहीं होता तो उनका मन अपने उपास्य को छलिया-निर्मोही का उपालम्भ देने से भी नहीं चूकता। यथा-

निर्मोही छलिया कहलावे, क्या लोगे छलकर मुझसे। अबल खड़े तुझ ओंर निहारे, आँसू है मेरे बरसे।

'प्यासी अखियाँ' द्धपृष्ठ 10, 7/2ऋ

इनकी रचनाओं मे पूर्ववर्ती भक्ति रचनाकारों का प्रभाव भी दिखाई देता है। वे कबीर की भाँति ही औरो के दोष देखने की अपेक्षा अपने दोष देखने को स्वयं के उ)ार के लिये आवश्यक मानते हैं। जैसे-

दोष सभी को हम दे देते, अपनी कमजोरी देखी ना। समझ सके तो खुद को समझें, औरों को समझे कुछ भी ना।

'जप हरि' द्धपृष्ठ 8, 5/2ऋ

वे सन्त चिन्तन के अनुरूप ही माया को जीवन और परमात्मा के मिलन में बाधाक मानते है। उनके अनुसार यह माया ही है जो मन को भ्रमित करती है। वे कहीं इसे वासना, कहीं इच्छा तो कही स्वप्नजाल कह कर सम्बोधित करते है। उन्ही के शब्दों में-

इस सुख दुख के मेले में मैं, माया के झूले झूल रहा। उसका वासा कण कण में है, फिर भी मैं उसको भूल रहा।

'जप हरि' द्धपृष्ठ 16, 21/2ऋ

इसके अतिरिक्त पुनर्जन्म, कर्मविधाान, सुमिरण, पाद सेवन, वन्दन, अर्चन, पूजन, समर्पण आदि सभी भक्ति के रूप तथा भक्ति भावित कर्मों में विश्वास उनकी समस्त रचनाओं में परिलक्षित होता है। एक विशिष्टता जो इन्हें अन्य उपासकों और रचनाकारों से विशिष्ट बनाती है वह है सर्वथा निष्काम और निस्वार्थ प्रेम। उन्होंने अपने ईष्ट से कहीं भी धार्म, अर्थ, काम या मोक्ष की कामना नहीं की है। इनकी समस्त रचनाओं में आदि से अन्त तक एक ही चरम लक्ष्य है वह है ईश प्रेम या मिलन। यह प्रभु मिलन की चरम लिप्सा और सन्त साहित्य का प्रभाव ही है कि कहीं कहीं वे स्त्रेण भाव ग्रहण कर ईश स्तुति करने लगते हैं-

हरि तुम राखों लाज हमारी, जोगन बन मैं भई पुजारी। नयना मेरे बस जाओ, इस जग से मैं हूँ हारी।

'नयना बरसे' द्धपृष्ठ 51 पद 92, पृष्ठ 21 पद 28ऋ

भाषायी कुशलता, वाकपटुता, काव्यशैली, छन्द विधाान आदि को अंगीकार करना इन्हें अभिष्ट नहीं रहा है। उन्होंने तो सीधो सादे शब्दों में अपने ईश्वर के प्रति भावों को इन कृतियों में व्यक्त किया है। इनकी भाषा आम बोलचाल की भाषा है। कुछ स्थानों पर तत्सम शब्दों जैसे द्वार, वंचित, विसर्जन, क्रन्दन, शून्य, निष्ठुर, दृष्टि, सृष्टि, शाश्वत आदि शब्दों का प्रयोग भी किया है लेकिन वे सहज भाव से लय, मिलान के प्रयुक्त सहज बोधागम्य शब्द रहे हैं। सरल उर्दू के शब्द जैसे मक़, मंजिल, सफ़र, गुलशन, मुकाम, बेचैन, रक़ा, गम, पर्दा आदि भी इनके पदों मे दिखाई देते हैं। हरियाणा और राजस्थान के अंचल से जुड़े होने के कारण कित, सुपना, जिवड़ा, आदि आंचलिक शब्द भी इनके पदों में प्रयुक्त हुए है। किसान कहानी में कहीं कहीं साधाारण बोलचाल के अंग्रेजी शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। भाषा या काव्य को अलंकृत में भी उनकी रूची नहीं है फिर भी अपने मनोभावों की सफल अभिव्यक्ति के लिए इनके पदों में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों का प्रयोग भी सहज रूप में देखने को मिलता है। जैसे -

बिन जल तड़े जैसे मछली। झर झर नीर गिरे दर्शन दो।

'अर्चना' द्धपृष्ठ 53, 95/2, पृष्ठ 53, 95/3ऋ

इनका सृजन हरि मिलन के चरम आनन्द की खोज का सृजन है। इनके पद स्वयं के जीवन में की गई हरि वियोग की अनुभूति के पद हैं। जिनका मूल्यांकन तर्कशास्त्र, शास्त्र सम्मत नियमों के अनुरूप नहीं किया जा सकता। उसके लिये हमें स्वयं की मनः स्थिति को रचनाकार के समान प्रेमाश्रुओं से सिंचित करना होगा। तभी हम इस रचनाकार की एक सुखमय संसार की खोज के लिये उत्कट अभिलाषा को समझ पायेंगे। स्वयं उन्हीं के शब्दों में -

बना सका ना ऐसी दुनिया, जहाँ खुशी के बादल झरते। प्रेम भरी हम डगर चले सब, खुशियों में ही तुमसे मिलते। एक दर्द हो कहे तुम्हीं से, दर्दों का भण्डार भरा है। पागल मनुआ खोज रहा है, कित जीवन आनन्द छुपा है।

'अर्चना' द्धपृष्ठ 26, 40/2ऋ

शुभेच्छाओं सहित - **डा0 मनोज भारत**

साहित्यकार एवं समालोचक

आदरणीय पाठक मंच समारोह के अधयक्ष श्री कालीचरण जी केसान, साहित्य जगत के प्रकाश स्तम्भ श्र)य श्री देश निर्मोही जी, हमारे विशिष्ठ अतिथि श्री अशोक बुवानीवाला जी, पाठक मंच के सभी साथी जिनसे मुझे पूरा स्नेह मिला है एवं उपस्थित सभी ईश्वर मूर्त रूप को मेरा प्रणाम।

सूर-नानक-कबीर-मीरा-दादू सभी सन्तों ने समय समय पर अपने अपने ढंग से प्रभु की अर्चना में गीत गाये हैं। जिनको गा कर तप्त हृदय शान्त हो जाता है और आँखें अज्ञात में छिपे पी को खोजने के लिये तड़ उठती है। मैंने लगभग ढेढ़ हजार भक्ति विरह गीत लिखे हैं।

श्र)य निर्मोही जी मेरी 15 पुस्तकों का विमोचन करने के लिए आये यह मेरा परम सौभाग्य है।

प्रोग्राम का अधिक नैलाव न हो जाये इसीलिये आज मेरी जिन15 पुस्तकों का विमोचन हो रहा है, उनमें से प्रत्येक पुस्तक की चार चार पंक्तियाँ आपको सुनाऊँगा-

1. 'बहता पानी'- पुस्तक से -

आँसू झरते ना रोक सकूँ, इतना यह दर्द छिपा है क्यों?

बह सका नहीं इस नदिया में, बैचेन हुआ फिरता हूँ क्यों?

2. 'आंखें नम हैं'- पुस्तक से -

एक गम हो तो कहें हम, गम अनेकों है यहाँ। डूबता ही जा रहा हूँ, ना निशा होगा यहाँ।

3. 'देश के नेताओं'- पुस्तक से -

ऐ देश के नेताओं बोलो, जीवित कंकाल हुआ नर क्यों।

क्यों तड़ रहे अब भी बालक, माताओं के स्तन सूखे क्यों।

4. 'किसान'- पुस्तक से -

जो हरि चाहे दुख क्यों माने, शीश झुका आज्ञा को माने।

दो दिन का यह रैन बसेरा, कल क्या होगा हरि ही जाने।

5. 'हरि ओम जपो' - पुस्तक से -

ओम कहो कटते सब बन्धान, ओम कहो वह ही सुखनन्दन।

ओम समाये सांस सांस में, उसकी लीला कर लो वन्दन।

6. 'वाट निहारूँ' - पुस्तक से -

तुम बिन मेरा मन्दिर सूना, हरि हिय में बस जाओ। कोना कोना रोवे दिल का, आ कर इसे सजाओ।

7. 'नयन बसो' - पुस्तक से -

तेरी दुनिया तू रखबाला, कैसे अपनी प्यास बुझाऊँ। शीश चरण धार रोना चाहूँ, चाह यही मैं तुझे मनाऊँ।

8. 'राम कह' - पुस्तक से -

राम नाम तू जप ले मनुआ, दो दिन का मेला जग सुपना। ईश्वर से तू प्रीति लगा ले, किसको सदा यहाँ है रहना।

9. 'प्यासी अंखियाँ' - पुस्तक से -

खिले नाथ तेरी बगिया में, प्रभु तू ही है मेरा माली। विधि से वन्चित करता पूजा, स्वीकारो प्रभु मेरी थाली।

10. 'सांस सांस में' - पुस्तक से -

खड़े द्वार पर हमें बुला लो, रूठो ना मेरे करूणाकर। झोली खाली अंसुवन भीगी, बीत न जाये शाम कहीं फिर।

11. 'नयना बरसे' - पुस्तक से -

नयन बरसते तुझे पुकारें, जीवन तुम बिन कौन संवारे। बस जाओ हरि मेरे दिल में, सांस सांस में तुझे उचारे।

12. 'अर्चना' - पुस्तक से -

सूखा पत्ता हुआ डाल का, इधार उधार गिर पड़ता हूँ। किससे जग में करें शिकायत, गिर उठकर रो लेता हूँ। तुम मुझसे आंखें मत मूंदो, जगपालक हे जगदीश्वर।

करूणा का मैं हुआ भिखारी, अनजाने मग का ईश्वर।

13. 'जप हरि' - पुस्तक से -

जप हरि जप हरि पार लगावे, कर्ता बन ना जिया दुखावे। शीश झुकाये तू चलता जा, पाप कटें तू हरि को पावे।

14. 'हरि बोलो' - पुस्तक से -

हरि बोलो हरि हरि ही बोलो, मन की आंखों को तुम खोलो।

क्षण भंगुर सुख मिटते सारे, हरि शाश्वत मन हरि में जी लो।

15. 'हरि भजन' - पुस्तक से -

मन हरि भजन करो सुख पाओ, जीवन के सब ताप मिटाओ।

यही सहारा देवे हरपल, मन उससे ही प्रीति बढ़ाओ।

शीघ्र ही एक पुस्तक और 'पी को खोजन' प्रेस में है। अगले एक दो माह में मार्केट में आ जायेगी। उसका एक गीत आपको और सुनाता हूँ-

पी को खोजन घर से निकली, पी न मिले अँखियाँ यह तरसी। काली रात डरावें मुझको, अँखियाँ मेरी झर झर बरसी। पी पी रटूँ न जियरा लागे, मिले न पी क्यों भये अभागे। जीवन यह क्यों सांसे लेता, टूट न जायें तुमसे धागे।

अँखियाँ मेरी भर भर आवें, पी न मिले जियरा घबरावे। रोम रोम में पीव बसे है, कैसे तुमको हम समझावे। आ मिलो तुम मोहि से सजना, तुम बिन जीवन भी क्या जीना? सभी बहारे फीकी लागे, मानों भी तुम मेरा कहना।

झर झर नीर गिरावे अखियाँ, निर्मोही तुम बनो न छलिया। मेरे प्राण पुकारें तुमको, पांव

पड़ू. मैं तेरे सैंया। ितरती प्यासी भई उदासी, अपना प्यार मुझे तू दे जा। जनम जनम से दासी तेरी, अब तो मेरी प्यास बुझा जा।

संक्षिप्त परिचय

चन्दोसी में 25 जुलाई 1942 को जन्म हुआ। पिता का कारोबार पीलीभीतद्धयू0पी0त्र्र में होने के कारण 8-9 साल की उम्र तक वहाँ रहना हुआ। पिता का बड़े भाई से मनमुटाव के बाद वापिस अपनी जन्मभूमि भिवानी द्धहरियाणात्र्र में आकर चिकित्सा कार्य करने लगे।

सन् 1961 में प्रभाकर परीक्षा उत्तीर्ण की। पिता के चिकित्सीय कार्य से जुड़े होने के कारण सन् 1964 में आयुर्वेदाचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण की।

सन् 1956 में बाल कल्याण समिति की स्थापना की। देश प्रेम की भावना से प्रेरित कार्यो की भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा0 राजेन्द्र प्रसाद ने भी प्रशंसा की। स्पष्टवक्ता एवं निर्भीक लेखन के कारण सन 1957 में हिन्दी आन्दोलन में ढेढ़ माह हिसार कारागृह में भी रहे।

लेख, व्यंगलेख, कहानी, कविताएँ सब समय समय पर प्रकाशित अनेक पत्र पत्रिकाओं में होती रहती है। सन् 1963 से कई वर्षो तक सप्ताहिक 'पूर्वी पंजाब' के सम्पादक भी रहे। उन्ही दिनो सन् 1964 में भ्रष्टाचार निरोधाक समिति की भी स्थापना की जिसकी प्रशंसा उस समय के पंजाब के मुख्यमंत्री कामरेड रामकिशन द्वारा भी की गई।

आयुर्वेदिक औषधियों के प्रचार-प्रसार के लिये श्री कलानाथ आयुर्वेद भवन की स्थापना भी की, परन्तु निरन्तर धार्मिक रूझान बढ़ने से भिन्न-भिन्न सन्तों के दृष्टिकोण समझने की जिज्ञासा ने, उनके साहित्य का अधययन किया। उपनिषद्, बु), महावीर, नानक, लाओत्से, शाडिल्य, शंकराचार्य, ब्लावट्स्की, कबीर, मीरा, दादू, रैदास, दरिया आदि अनेक सन्तों की बहती नदी में भाव विभोर हो स्नान किया। यह अनुभव किया सभी नदियां सागर की ओर भागी जा रही हैं। हम सब लहर हैं, लहर अन्तस में खोज करेगी तब पायेगी सब सागर है। यही समाधि फलित होती है। भागती हुई लहरों को देखेगी यहीं संसार है।

वर्तमान में 'कोकड़ा औषधालय', भिवानी में चिकित्सा एवं लेखन कार्य में कार्यरत।

समीक्षा -

सचिदानन्द सार-तत्व के प्रेरक

सत चित आनन्द के सार तत्व को सर्वथा संग्रहणीय तथा आत्मसात कर लेने की प्रेरणा लिये कुछ पुस्तकों का संसार रचा है श्री चन्द्र 'प्रभाकर' ने। संसार सागर अथाह है, इससे पार जाने की लगभग सभी की लालसा होने के उपरान्त भी बहुत कम लोग होते हैं जो दृश्य विषयों का त्याग करके प्रभु स्मरण द्वारा भक्ति रूपी नौका पर सवार हो कर इससे पार पा लेने में सक्षम हो जाते हैं। वासनामयी सत्ता का परित्याग, दृश्य वस्तु के प्रति दृष्टि आकर्षण भाव और मन की चंचलता से सदैव सजग हो कर निरन्तर प्रभु स्मरण की अभ्यास समाधाी में आकण्ठ डूब जाने के प्रेरणा भाव संजोये हैं, इनकी पुस्तकें।

पिछले दिनों चन्द्र 'प्रभाकर'जी की पाँच पुस्तकें प्रकाशित करते समय मेरे अन्तरमन के भाव इनमे लेखन और वर्णित सार तत्व की ओर अनायास ही मनन करने की आकांक्षा कर बैठे। ये पांच पुस्तकें क्रमशः हरि ओम जपो, बहता पानी, देश के नेताओ, किसान और आँखे नम हैं। सूर्य प्रभा प्रकाशन में प्रकाशित हुई है। विषय सामग्री भिन्न होते हुए भी उचित विचार सार लिए हैं। जिन पर कुछ चर्चा इस प्रकार से है -

'हरि ओम जपो' लगभग 115 भजनों का संग्रह है। इस पुस्तक के आवरण पृष्ठ पर ओम नाम की महत्ता तथा सब बन्धानों को काट डालने की ओम् सिमरण शक्ति मन्त्र का उल्लेख किया है -

ओम कहो कटते सब बन्धान, ओम कहो वह ही सुखनन्दन

ओम समाये सांस सांस में उसकी लीला कर लो वन्दन।

इन भजनों में कही कबीर की सधाुक्कड़ी वाणीं है तो कहीं मीरा का माधाुर्य भी झलकता है। कवि अपने प्रभु को मानस मन्दिर में प्रियतम की प्रति मूर्ति के रूप में स्थापित करते हुए भावावेग से कह उठता है -

मेरा बालम मुझसेरूठा, बना हुआ है क्यों हरजाई?

आशायें लेती अंगड़ाई, बजी कभी पर न शहनाई।

कह्री पर अपने बालम यानी प्रभु से उपालम्भ भरे स्वर में अपनी व्यथा कथा

बयान करता है तो कहीं पर प्रेम की मीठी ुहारों से अपने प्रभु का मान मुनौबल करते हुए सर्वथा समर्पण भाव में कहता है-

चल चल कर थके यहाँ टूटे, पूछे तुझसे प्रभु क्यों रूठे?

तुम बिन न दीप जले मेरा, अपना लो फिर रस्ता दीखे।

और फिर सर्वस्व प्रभु को अर्पण कर निर्विकार भाव से उसकी सत्ता को स्वीकारते हुए सार तत्व में कहता है-

जीवन एक पहेली माना, गहराई को किसने जाना।

;षि मुनि हारे धयान लगाकर, कुछ भी हाथ न हरि घर जाना।

इन भजनों में कवि वक्ता भी है, दृष्टा भी है और सार तत्व का प्रेरक भी है। कुल मिला कर पुस्तक श्रेष्ठ भजनों का सार है।

चन्द्र 'प्रभाकर' के गीतें में लय है उनकी कविताओं में रवानगी। उनका कविता संग्रह 'बहता पानी' एक स्नेह दिल झरने की बहती धाार है। जीवन के सुख-दुख, पाप पुण्य, हानि-लाभ, की गणना में न पड़कर जीवन के चलन का प्रतिपादन किया है। इन्होंने सुख दोगे तो सुख पाओगे ऐसी संदेश भरी कविताओं का संग्रह है 'बहता पानी' जैसे-

जो रोते नयन हंसी दे दो, अनमोल खजाना पाओगे।

तुम जितनी चुभन मिटाओगे, उतनी सुवास को पाओगे।

जीवन कैसे जीना चाहो, संगीत सुनो इस जीवन का।

सुख देने से सुख मिलता है, सुख दो फिर खिले कमल मन का।

इन कविताओं में मानव मन की कोमलता, जीने का बेहतरीन ढंग, श्रम बिन्दुओं के प्रति अथाह प्रेम और श्र)ा का लहलहाता सावन झलकता है।

केवल यही नहीं, चन्द्र 'प्रभाकर' की लेखनी से ' देश के नेताओं' शीर्षक से आई पुस्तक में आज के भ्रष्ट नेताओं से सीधो सवाल भी खड़े किये है। उनका कवि सीधो सीधो प्रश्न पूछता है सत्ता के इन ठेकेदारों से -

ऐ देश के नेताओ बोले, जीवित कंकाल हुआ नर क्यों?

क्यों तड़ रहे अब भी बालक, माताओ के स्तन सूखे क्यो?

दुख की दारूण अग्नि में जल, कैसे मुस्काएँ हम बोलो?

अविरल आंसू की गंगा में, धीरज दें मन कैसे बोलो?

और इतना ही नहीं, दुखी कवि नेताओं को मात्र कोसने तक ही स्वयं को सीमित नहीं रखता अपितु आगे बढ़कर उन्हे सही राह भी दिखाता है अपनी

कविता के माधयम से यह कह कर-

दुखित जगत में प्रेम बहा दो, दुखी हृदय को गले लगा लो।

ऐसी कविताओं में प्रेम प्रवाहिनी गंगा की बहती धाारा भी दृष्टिगोचर होती है।

आंखे नम है' पुस्तक में कवि का दर्द और ज्यादा दिखलाई पड़ता है। खामोशी में उसके अन्तरमन की पीड़ा और अधिाक टूट पड़ती है। आंखे नम हैं तो भी वह जीवन की क्षण भंगुरता का दर्शन दुनिया के सामने रखता है। वह निरन्तर कहता है कि कुछ नहीं साथ जायेगा। यह सब कुछ जिसे मनुष्य अपना समझ बैठा है, एक दिन यहीं धारा का धारा रह जायेगा और यह जीवन खत्म हो जायेगा। इसलिये हे मानव प्रभु में धयान लगा ले। जीवन में प्राप्ति, संग्रह, और फिर विछोह का मार्मिक वर्णन अहसास दिलाता है कि चाहे राहें कितनी भी कठिन और कंटीली रहे, प्रभु का दामन सख्ती से पकड़े रहो। सच्चे और अच्छे कर्म करो। व्यर्थ समय न गवाओ।

'प्रेम का दीपक जलाना, चोट अपनी भूल जाना।

चलना यही नियति है और इसी पर चलते जाना।

जीवन है जो अजर है अमर है और सत्य है शिव है, सुन्दर है।

प्रेम और भक्ति का कवि चन्द्र 'प्रभाकर' सामाजिक सरोवारों से भी जुड़ा हुआ कवि है। समाज में व्याप्त एक मामूली किसान की दुर्दशा भी उससे कहीं छिपी हुई नहीं है। अपनी पुस्तक 'किसान' में वह अवज्ञाकारी सन्तान और स्वार्थी तत्वों की ओर प्रश्न उठाता है। कथा प्रसंग के माधयम से वह किसान की पीड़ा को समाज के सामने रखता है। कितने अरमानों से एक अनपढ़ किसान अपने बेटों को पढ़ाता-लिखाता है, उन्हें शहर भेजता है और जब वह ही लड़के पढ़ लिख कर शहर में नौकरी करने लगते हैं तो फिर अपने किसान पिता को छोड़ देते है। अकेले जूझने के लिये उन समाज झंझावतों से जो आज के जमाने की देन है। किसान हिम्मत नहीं हारता, गाँव में रहकर अपनी जड़ों पर खड़ा रहता है। अडिग वटवृक्ष की भाति जो सभी को छाया देता है। सन्तोष को इस पुस्तक में वरीयता दी गई है। सन्तोष धान के द्वारा किसान फिर से खड़ा हो पाता है। अपना कठिन जीवन जीने के लिये। पुस्तक के अन्तिम पृष्ठों में 'ज्ञानामृत' शब्दों का सार दिया है। जिससे पुस्तक लाभकारी और अधिाक सार्थक हो गई है।

चिन्तन के योग्य हृदय स्पर्शी भजनों के संग्रह पुस्तक रूप में 'बाट निहारूँ' में प्रकाशित हुए है। जहाँ कवि ने प्रभु को निहारते हुए भाव व्यक्त किये है - हे प्रभु ! तुम्हारे बिन मेरा मन्दिर सूना है, मेरा मन उद्विग्नता को प्राप्त हो रहा है। तुम

आओ मैं तुम्हारी बाट निहारता हूँ।

'जप हरि' पुस्तक में मन को असीम शान्ति प्रदान करने वाले भजनों का संग्रह है। तुम कहाँ छिपे हो, भगवान हम याद करते है नयनों से नीर बहा जा रहा है। फिर भी तुम्हारी पूजा करते है तुम आओ मेरे मन को शान्ति प्रदान करो।

'सांस सांस में' राम बसे हैं। हृदय को यह भजन संग्रह अन्तराल को छूता है। बंशी की धुन का दीवाना कवि प्रभु को सुखकर्ता तथा दुःख भंजक कह कर उसकी पूजा करता है। भजन अच्छे है। अपनी पुस्तक 'प्यासी अंखियाँ' में 97 भजन लिख कर कवि प्रभु को माली और इस संसार को बगीचा बतलाता है। करूणानिधाान के कारण नीर के बगैर स्वयं की आंखो को प्यासी कहता है भक्ति वर्षा नीर से अपनी प्यास बुझाने का प्रयास करता है। इन भजनों में भाव की झर झर झरती गंगा है। नयनों की नीर धाारा प्रवाहमान है तथा भाषा सरल व सपाट है।

'नयन बसो' पुस्तक में 98 भक्ति भावना से परिपूर्ण भजन हैं इन भजनों मे कवि ने समाज को चेताया है कि झूठी आंशायें त्याग कर मालिक के चरणों में प्रेम करो। उसकी सलौनी तथा मोहक मूर्ति को अपने नयनों में बसा लो। जीवन सार्थक हो जायेगा।

अर्चना में कवि प्रभु से पूछता है, कहाँ छिप गये हो मेरी नैया के खिवैया? इन दो नयनों के नीर से हम तुम्हारी अर्चना करते हैं। तुम्हारे यदि चरणों स्पर्शका हो जाता तो हम आंसुओं से उन्हें सीचते। नहला डालते। अब आओ, हमारा क्या गुनाह है आखिर? आओ।

'मेरी आंखों में बस जाओ' जग में ना मुझको तरसाओ।

मैं बि)हीन ना समझ सका, अपनी करूणा को बरसाओ।

'नयना बरसे' कवि की अन्तस पीड़ा का सत्य है। वह अपने ईश्वर से कहता है -

हे हरि मैं तेरे गुन गाऊँ, प्यार मिले तो तर जाऊँ।

चल चल कर थक मैं हारा, साहस दो चरणा रज पाऊँ।

और फिर 'राम कह' में अपनी भावना को कुछ यूं व्यक्त किया है-

द्वारे तेरे चल कर आऊँ, नही तुझे मैं कभी भुलाऊँ।

जग की मृगमरीचिका में ंस, निशदिन मैं हूँ नीर बहाऊँ।

निशदिन हरि दर्शन की एक मात्र लालसा ही इस काव्य संग्रह का सार तत्व है। इस प्रकार कवि चन्द्र 'प्रभाकर' ने भक्ति काल कवियों के साथ उनकी

परिपाटी का भी समर्थन किया है।

'हरि बोलो' हरि भक्ति के अनमोल भजनों का संग्रह है। जहाँ पर कवि हृदय चन्द्र 'प्रभाकर' मन की आँखों को खोलकर निरन्तर हरि बोलते रहने का सन्देश देते है। हरि शाश्वत सत्ताधीश है, ऐसा मन में विचार कर प्रत्येक प्राणी हरि बोलो और क्षण भंगुर जीवन सुख की माया से स्वयं को पृथक रख कर प्रभु सिमरण करे। यही इस पुस्तक का सार है।

'हरि भजन' में चन्द्र 'प्रभाकर' जी ने अपने प्रभु को कहीं पर प्रीतम तो कही पर पिता-माता और कहीं पर दाता और पालन हार कह कर विनयवत हो कर भजनों की रचना की है। इन भजनों में प्रभु के प्रति कवि को आत्मसमर्पण देखिये-

तुम बिन नहीं कोई सहारा, नैया पार करो मैं हारा।

कट जायें यह काली रातें, अपना दे दो हमें सहारा।

मंगल कर्ता दुख के हर्ता, सारे जग के तुम हो भर्ता।

तुही बचाये भटके को प्रभु, रो रो शरणा तेरी पड़ता।

सर्व प्रथम तो भक्ति भाव उत्पन्न होना प्राणी में पूर्व जन्मों के संचित शुभ कर्मों के ›ल का ही परिणाम होता है, उस पर शब्दों में उसको कलम ब) करना अपने आप में एक दुस्तर कार्य होता है। जिसे बखूबी से अन्जाम दिया है चन्द्र 'प्रभाकर' जी ने। कहीं कहीं छन्द भंग होने पर भी लय गेयता का प्रभावशाली होना बेहतर है। निसंदेह कहा जा सकता है कि पुस्तकें अच्छे बन पड़ी। आधुनिक कलिकाल में ये कृतियाँ भारतीय जन मानस का सही पथ प्रदर्शन करेगी ऐसा मेरा विश्वास है। मैं कवि चन्द्र 'प्रभाकर' के लिये ऐसी कृतियों का लेखन करते रहने की अनुशंशा तो करूँगा ही। साथ में इस अधयात्म कवि के लिये स्वरचित निम्न पंक्तियों के साथ अपने हृदय की शुभ कामनाएँ भी देना चाहूँगा।

ये मानव तन अनुपम है, लुटा दो प्यार की खातिर।

झुका दो आसमानों को, विजय के हार की खातिर।

छिपा दो दाग गैरो के, कभी राकेश बनकर तुम।

हलाहल पान भी कर लो, विश्व के प्यार की खातिर।

-महेन्द्र शर्मा 'सूर्य'

साहित्यकार एवं समालोचको।

श्री चन्द्र 'प्रभाकर' रचित रचनाओं की समीक्षा -

साहित्यकार चन्द्र 'प्रभाकर' रचित रचनाओ को तीन विधााओं मे विभाजित किया जा सकता है

1. कहानी

2. कविता और

3. भजन

कहानी विधाा में रचना है 'किसान'। 'किसान' यथार्थवादी लम्बी कहानी है। कहानी का आरंभ आदर्श से होता है और अंत यथार्थ में। 'किसान' कहानी का नायक है। उसके दो बेटे है बड़ा बेटा शेखर और छोटा अजीब। किसान अपने बडे शेखर को उच्च शिक्षा दिलाता है और छोटे बेटे अजीब को अपनी सहायता के लिए घर ही रख लेता है जिससे कि खेती मे उसकी मदद कर सके। किसान सोचता है, कि सब मिलकर साथ रहेंगे,शेखर शहर मे रहकर परिवार की आर्थिक मदद करेगा और छोटा बेटा अजीब खेती संभालेगा।

पर यह सब सम्भव नहीं हो पाता। शेखर परिवार से अलग हो जाता है। यह संयुक्त परिवार के टूटने की व्यथा कथा है और किसान के स्वप्न भर भराकर टूट जाते हैं। शेखर अपनी बहिन को साथ रखकर इसलिये नहीं पढ़ाता कि बहिन की शिक्षा को वह अपने ऊपर बोझ समझता है। इस तरह कहानी का अंत यथार्थ में होता है।

औद्योगिककरण के इस युग में संयुक्त परिवार टूट कर एकल परिवारो में परिवर्तित हो रहे हैं। परिवार के सभी सदस्य अपने-अपने स्वार्थो में लिप्त है। संतान माता-पिता की व्यथा से परिचित होते हुए भी अनजान बने हुए हैं। माता-पिता की मानसिक पीड़ा कोई नहीं समझता।

कहानीकार चन्द्र 'प्रभाकर' प्रस्तुत कहानी द्वारा टूटते-बिखरते परिवार और बुजुर्गो की व्यथा कथा को, स्वार्थान्धाता को उजागर करते हैं।

इस कहानी की सबसे बड़ी विशेषता पात्रानुकूल भाषा है जो हमें उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द में देखने को मिली थी यथा-

शेखर अपने पिता किसान से कहता है - ''आपने तो हमें कान्वैन्ट में नहीं पढ़ाया। अगर पढ़ाया होता तो क्या मैं दस-बारह हजार रूपए माह की टुच्ची नौकरी करता। किसान का उत्तर देखिए - ''मेरे पास जैसे साधान थे, ... उत्ता पढ़ा

दिया तुम अपने टाबरो को खूब पढ़ाओ। मैने तो खुशी है।

शेखर का जवाब देखने योग्य है - वह अपनी बहिन की शादी के विषय में पिता से कहता है- ''शादी की चिन्ता करो थम। अपना तो नौकरी में भी गुजारा नहीं चलता। मौज तो अजीब की है यही खेत यहीं घर। ऐश मारे सै ऐश।''

कहानी में प्रिंटिंग की अशु)याँ कहीं कही अखरती है। यथा- तुरन्त जाने का मूढ़ बना लिया। द्धपृ0 सं0 38ऋ

कविता संग्रह की पहली कृति है। 'आँखें नम है' यह रचना कवि चन्द्र 'प्रभाकर' के उस प्रेम की ओर संकेत करती है जो भौतिक है यथा-

'सुपने सब रंगीन हुए, संग साथ कसम थी खाई।

पर हाय विधाता रूठा, छोड़ा ना देर लगाई।'

द्धपृ0 संख्या 28ऋ

कवि का भौतिक प्रेम, उदात्रीकरण में परिवर्तित होता है, जैसा कि प्रत्येक महान रचनाकार को कुंदन बनाता है, यथा-

प्रेम का दीपक जलाना, चोट अपनी भूल जाना।

वैर को दिल से हटाकर, ूल इस जग में खिलाना।

कवि का दर्द, पाठक के मर्म को छूता है-

आज मेरे होंठ चुप क्यों, क्यों उदासा आज छाई?

क्यों न हो पाया सुबेरा, दुख भरा यह रात आई।

द्धपृ0 सं0 7ऋ

कवि श्री चन्द्र 'प्रभाकर' का जन्म 25 जुलाई 1942 में हुआ, जब देश को आजादी मिली तब वे 5 वर्ष के थे। देश को आजाद कराने के लिए युवाओं ने अपनी जान की बाज़ी लगाई थी। कितने ही युवा शहीद हुए और भारत माता के मंदिर की नीवं के पत्थर बनकर नीवं में समा गए। उन्होंने सोचा था जब देश आजाद होगा तो, गरीबी, अशिक्षा, भुखमरी सब मिट जाएगी। अपना राज्य होगा। लेकिन यह स्वप्न सन् 1960 तक आते आते भर-भराकर टूट गया। इस

की टीस 'देश के नेताओं' कविता संग्रह में देखिए –

तन ढकने को है वस्त्र नहीं, खाने को भी है अन्न नहीं।

ऐसी आजादी से तब क्या, जब जीवन में उल्लास नहीं।।

द्धदेश के नेताओ, पृ0 सं0 7ऋ

कवि चन्द्र 'प्रभाकर' की जीवन दृष्टि भौतिकता से आधयात्मिकता की ओर

रही है - यथा -

रचनाकार की तीसरी विधाा भजन संग्रहों की कुल संख्या।। ग्यारह है। साहित्यकार की प्रकाशित 15 रचनाओ में से 11 रचनाएँ भजनों की है। यह संख्या कवि की आधयात्मिकता की ओर उड़ान को स्वयं सि) करती है- कवि का अपने आराधय के प्रति समर्पण निम्न पंक्तियों में देखिए -

अर्चना कैसे करूँ मैं, पास में कुछ भी नहीं।

इन सकता वाती तेरी, भाग्य क्या मेरा नहीं?

प्रस्तुत भजन हमें कवयित्री महादेवी की याद दिलाता है - जब वे गीत में कहती हैं-

''क्या पूजा क्या अर्चन रे

उस असीम का लघुतम मंदिर

मेरा मानस मन रे।''

'राम कह' भजन संग्रह में आराधय के प्रति कवि की पुकार -

हरि तुम मग मो को दिखलाओ।

अन्तस में आ जाओ।

हरपल तुझे सदा हम सुमरे,

जगा प्यास को जाओ।'' द्धपृ0 सं0 7ऋ

कवि चन्द्र 'प्रभाकर' का धाार्मिक रूझान निरंतर बढ़ता गया, धाार्मिक रूझान बढ़ने से भिन्न-भिन्न संतों के दृष्टिकोण को समझने की जिज्ञासा के कारण उनके साहित्य का अधययन किया। उपनिषद्, महात्मा बु), महावीर स्वामी, गुरू नानक देव, दादू, लाओत्से, शांडिल्य शंकराचार्य, कबीर, मीरा आदि अनेक संतों का उन्होंने अधययन, मनन और चिंतन किया। ीलस्वरूप कवि चन्द्र 'प्रभाकर' की रचनाओं में उन सब का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। 'जप हरि' रचना में कवि अपने आराधय से प्रणय निवेदन करता है -

चाहता हूँ भूल जाऊँ, याद सब अपनी पुरानी।

गीतों को तेरे गाऊँ, तू जगत की है कहानी।

हम तिमिर में है भटकते, किरन को तेरी तरसते।

शांति के भंडार हो तुम, प्राण पाने को मचलते।

द्धजप हरि पृ0 सं0. 7ऋ

'सांस सांस' कृति में कवि निरंतर प्रेम पंथ पर चलते रहने का आग्रह

करते हुए प्रभु से निवेदन करता है-

कुछ ना जाँनू चलता जाऊँ, मुझे सहारा दे दे राम।

कृपा दृष्टि तेरी हो जाये, बन जाये तब सारे काम।

कवि चन्द्र 'प्रभाकर' की काव्य -यात्रा हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल के कवियों की तरह अब समर्पण और स्वान्तः सुखाय' के पथ पर अग्रसर होती हुई आगे बढ़ती है, यथा -

''तुझ चरणों में पड़ा रहूँ मैं, दास तुम्हारा ना ठुकराना।

हारा थका मुसाफ़िर हूँ मैं, न मेरा अब कोई ठिकाना।

करें अर्चना नीर गिरे यह, धूप दीप नैवैद्य नहीं है।

अखियाँ झरती बस झरने दे, जीवन का सौंदर्य यही है।''

द्ध'हरि भजन' पृं. सं0 98ऋ

'बाट निहारूँ' संग्रह में कवि जीवन की क्षण भंगुरता के सम्बंधा में प्रभु से निवेदन करता है -

''ठोकर खाते उठते गिरते, बीत गया यह जीवन सारा।

मिटा जा रहा हूँ मैं ऐसे, मिटे भोर का जैसे तारा।''

द्धपृ0 सं0 20ऋ

'प्यासी अखियाँ' रचना में कवि पुनः भक्ति काल के कवि रसखान की तरह ही भगवान श्री कृष्ण से निवेदन करता है-

बंशी बजैया रास रचैया, चाह रहा तेरी मैं छैंया।

मेरे सर्जक मुझे न भूलो, थामों प्रभु जी मेरी बहियाँ।

द्धपृ0 सं0 7ऋ

'नयन बसो' काव्य संग्रह में कवि हरि से अपने ही घट में बस जाने की प्रार्थना करता है-

मेरे घट में बस जाओ हरि, राह तुम्हारी हम तो तकते।

अन्तर्यामी जानो सब कुछ चाह प्यार तुम्हारा पाते।''

द्धपृ0 सं0 56ऋ

'नयना बरसे' संग्रह में कवि प्रभु से अपनी यात्रा के संबंधा में निवेदन करता है -

''चल चल कर थक गए हम, ना मिली मंजिल भटकते।

अश्रु को स्वीकार कर लो, मग हमें दो हम बिलखते।

द्धपृ0 सं0 7ऋ

कवि का 'अर्चना काव्य संग्रह जिसका रचनाकाल 1974 है वहाँ से लेकर 'हरि बोलो' काव्य संग्रह रचना काल 2008 ई0 तक इस भौतिक जगत से पलायन करता हुआ। मात्र ईश्वर में ही खो जाने की कामना करते हुए कहता है -

''हरि हरि सुमरूँ तुझे न भूलूँ, नाथ यही वर मुझको देना।

खो जाऊँ तेरी यादा में, क्षण भंगुर जग से क्या लेना।।

द्धपृ0 सं0 33ऋ

'हरि ओम जपो' काव्य रचना में कवि अपने आराधय से अपनी विवशता प्रदर्शित करते हुए निवेदन करता है -

'दीनबंधु तुझे पुकारूँ, तू बता कैसे रिझाऊ?

नीर यह अंखियाँ गिराती, तम घना मैं चल न पाऊँ।''

कवि चन्द्र 'प्रभाकर' की रचना यात्रा 1964 'देश के नेताओ' से आरम्भ होती है और ईसवी सन् 2009 तक निरंतर

'हरिओम जपो' तक अग्रसर है, इनकी रचना यात्रा में अनेक पड़ाव है, कवि 'देश के नेताओ' काव्य संग्रह में जहाँ देश की वर्तमान दशा से व्यथित है, जहाँ 'किसान' कहानी में रचनाकाल ई0 सन् 2008 में वर्तमान युवा पीढ़ी जो बुजुर्गों के प्रति अपने दायित्व से मुँह मोड़े हुए है, उसे उजागर करता हुआ कर्तव्यबोधा की ओर संकेत करता है।

वहीं भजन संग्रह 'अर्चना' से 'हरि ओम जपो' तक समष्टि से व्यष्टि तक की अन्तरयात्रा पर अग्रसर है। कवि की रचनाओ के प्रकाशन के लिए मैं सूर्यप्रभा प्रकाशन, नई दिल्ली तथा सुकीर्ति प्रकाशन कैथलद्धहरियाणाऋ को मैं साधुवाद देता हूँ। प्रकाशन एवं मुद्रण दोनों ही सुन्दर बन पड़े हैं।

कवि चन्द्र 'प्रभाकर' अभी सृजन में व्यस्त हैं, कवि ज्यों ज्यों लिखता है त्यों त्यों निरंतर निखरता है, यह तथ्य उनकी रचनाओं में मिलता है। कवि प्रभाकर हिन्दी साहित्य को और भी श्रेष्ठ रचनाएँ प्रदान कर उसके भंडार की श्रीवृ) करेंगे ऐसी मेरी शुभ कामना है।

डॉ0 राधााकृष्ण चन्देल

निदेशक, महिला महाविद्यालय,

झोझू कला, भिवानीद्धहरियाणाऋ